



CLASS: II
SUBJECT : (HINDI)
CHAPTER NUMBER: 16
TOPIC : बरगद और हाथी
SUB TOPIC : पाठ विश्लेषण, शब्दार्थ

CHANGING YOUR TOMORROW



बरगद और हाथी

तालाब के किनारे एक पुराना बरगद का पेड़ था। वह जंगल के सभी पशु पक्षियों की मदद करता था। एक बार दूसरे जंगल से एक घमंडी हाथी आया। उसे पेड़ की तारीफ सुनकर अच्छा नहीं लगा।

उसने पेड़ के पास जाकर कहा, “ अरे बूढ़े पेड़। तुम खड़े-खड़े सबकी मदद कैसे करते हो? मैं भी देखूंगा। उसने पेड़ की पत्तियाँ तोड़कर खाईं। टहनियों और डालियों को तोड़ डाला।

पेड़ ने कहा, “ देखो भाई! तुम्हें जितनी पत्तियाँ खानी हैं खालो पर टहनियों और डालियों को मत तोड़ो। इस पर रहने वाले पशु पक्षी गिर जाएँगे। हाथी नहीं माना।



एक चींटी पेड से निकली और हाथी की सूँड़ में घुस गई। हाथी ने छींका अपने कान फड़फड़ाए। अपनी सूँड़ हिलाई पर चींटी पर कोई असर न हुआ।

वह दर्द से चिल्लाया, “ हाय! मैं मरा। कोई चींटी को बाहर निकालो। “

उसे तालाब के पानी की याद आई। उसने सूँड़ में पानी भरा। पानी को जोर से सूँड़ से बाहर फेंका। पानी के साथ चींटी भी निकल गई।



तालाब के ऊपर तो पानी था लेकिन नीचे दलदल थी। हाथी दलदल में फँस गया। उसने पेड़ से कहा, “पेड़ दादा हमें इस दलदल से निकालिए।”

पेड़ ने हाथी को मुसीबत में देखा तो अपनी सबसे बड़ी डाल नीचे झुका दी। उस डाल को पकड़कर हाथी दलदल से बाहर आ गया। हाथी को समझ आ गया कि सब पेड़ की तारीफ क्यों करते हैं। उसने पेड़ से माफी माँगी और चला गया ।

पाठ विश्लेषण

शब्द

घमंडी

दलदल

मदद

मुसीबत

माफी

दर्द

तारीफ़

असर

टहनियाँ

अर्थ

अहंकारी

कीचड़ से भरा हुआ

सहायता

संकट

क्षमा

तकलीफ

बड़ाई

प्रभाव

पेड़ की डालियाँ

सीखने प्रतिफल

बच्चों में शुद्ध उच्चारण तथा भाषाई शुद्धता का विकास हुआ ।

THANKING YOU
ODM EDUCATIONAL GROUP